आवाज़ ... आम आदमी की

इन्क़िलाबी नज़र

लखनऊ, शुक्रवार, 21 जून 2024

बुद्धि के सिवाय विचार प्रचार का कोई दूसरा शस्त्र नहीं है, क्योंकि ज्ञान ही अन्धकार को मिटा सकता है।
- शंकराचार्य

वर्ष 16 अंक 284 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12

तापमान - अधिकतम 37.8°C (+04) न्यूनतम 27.3°C(+06) सेंसेक्स 77,478.93 (+141.34) निफ्टी 23,567.00 (+051.00) सोना 72,590 चांदी 92,500 मुद्रा - डालर 83.65 दिरहम 22.77 रियाल 22.30

एरा यूनिवर्सिटी में न्यूरोसाइंसेज रिसर्च में रुझान विषय पर संगोष्ठी

लखनऊ (सं)। एरा यूनिवर्सिटी में इंडियन एकेडमी ऑफ न्यूरोसाइंसेज की ओर से बुनियादी और क्लिनिकल न्यूरोसाइंस रिसर्च में रुझान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के आयोजन सचिव प्रोफेसर सैयद शादाब रजा, आईएएन सचिव और एरा विश्वविद्यालय में जैव प्रौद्योगिकी के प्रोफेसर थे। इसमें राज्य के प्रमुख न्यूरोसाइन्सेज, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और छात्रों ने न्यूरोसाइन्सेज के क्षेत्र में नवीनतम प्रगति और भविष्य की दिशाओं पर चर्चा की।

संगोष्ठी में गंगवार इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (जीआईएमएस) के प्रमुख और आईआईटी कानपुर में रसायन विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर संदीप वर्मा, आईएएन के अध्यक्ष प्रोफेसर विनय कुमार खन्ना, अध्यक्ष आईएएन-लखनऊ चौप्टर डॉ. पी.के. दलाल, कोषाध्यक्ष आईएएन प्रोफेसर अशोक अग्रवाल और एरा यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर अब्बास अली महदी समेत कई प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पीएचडी, स्नातकोत्तर और स्नातक छात्रों के साथ-साथ एरा विश्वविद्यालय के एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों की भी भागीदारी रही। अपने सम्बोधन में डॉ. पी.के. दलाल ने भारत में न्यूरोसाइन्सेज में अधिक स्नातक और परास्नातक कार्यक्रम स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि भारत में न्यूरोसाइन्सेज की शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों की संख्या अन्य विकसित देशों की तुलना में काफी कम है। कहा कि देश में इस क्षेत्र की प्रगति के लिए ऐसे कार्यक्रमों का विस्तार महत्वपूर्ण है। एरा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अब्बास अली महदी ने घोषणा की कि एरा यूनिवर्सिटी एक नया पाठ्यक्रम न्यूरोसाइन्सेज में एम.एस.सी. शुरू करने के लिए तैयार है। उन्होंने भारतीय न्यूरोसाइन्सेज अकादमी के ऐतिहासिक महत्व और इसके साथ अपने व्यक्तिगत जुड़ाव पर भी चर्चा की और भारत में न्यूरोसाइन्सेज शिक्षा और अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। प्रोफेसर संदीप वर्मा ने न्यूरोइंजीनियरिंग पाठ्यक्रम के विकास का प्रस्ताव रखते हुए न्यूरोसाइन्सेज के साथ इंजीनियरिंग सिद्धांतों को एकीकृत करने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस पाठ्यक्रम को डिजाइन करने और लागू करने में आईआईटी कानपुर और जीआईएमएस से एरा विश्वविद्यालय को हर संभव सहायता का आश्वासन भी दिया। जिसका उद्देश्य नवीन समाधान बनाने के लिए इंजीनियरिंग को न्यूरोसाइन्सेज के साथ मिश्रित करना है।

संगोष्ठी में कई सत्र आयोजित किए गए जो न्यूरोसाइन्सेज में अत्याधुनिक अनुसंधान और नैदानिक प्रथाओं पर चर्चा का विषय रहा। प्रोफेसर संदीप वर्मा ने सूक्ष्म-इंजीनियर उपकरणों के डिजाइन और स्टेम सेल इंजीनियरिंग एवं तंत्रिका इंजीनियरिंग में पेप्टाइड्स में फंसे गैसीय अणुओं के उपयोग पर अपना अभूतपूर्व काम प्रस्तुत किया। उनके भाषण में अल्जाइमर रोग और पार्किंसनिज्म जैसी न्यूरोडीजेनेरेटिव बीमारियों के उपचार के दृष्टिकोण को बदलने के लिए इन उपकरणों की क्षमता पर प्रकाश डाला गया। एराज लखनऊ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के डॉ. वरुण मल्होत्रा ने पार्किंसंस रोग से जुड़ी नैदानिक जटिलताओं का गहन विश्लेषण किया और स्थिति को प्रबंधित करने के लिए किए जा रहे वर्तमान चिकित्सीय उपायों पर चर्चा की। रोगी देखभाल और उपचार रणनीतियों में उनकी अंतर्दृष्टि उपस्थित लोगों के लिए विशेष रूप से ज्ञानवर्धक थी। एमिटी यूनिवर्सिटी की डॉ. प्राची श्रीवास्तव ने कम्प्यूटेशनल न्यूरोसाइन्सेज के क्षेत्र को प्रस्तुत किया जिसमें जटिल तंत्रिका प्रणालियों को समझने और विविध हस्तक्षेपों के परिणामों का पूर्वानुमान लगाने के लिए कम्प्यूटेशनल मॉडल और सिमुलेशन के उपयोग पर प्रकाश डाला गया। उनके भाषण ने न्यूरोसाइन्सेज अनुसंधान को आगे बढ़ाने में कम्प्यूटेशनल उपकरणों की शक्ति का प्रदर्शन किया। संगोष्ठी का समापन प्रोफेसर शादाब रजा के सम्बोधन के साथ हुआ। उन्होंने सहयोग को बढ़ावा देने, ज्ञान साझा करने और न्यूरोसाइन्सेज में भविष्य के अनुसंधान को प्रेरित करने में ऐसी सभाओं के महत्व पर जोर दिया।